व्यक्ति–केन्द्रित कविताओं के चितेरे : नागार्जुन

प्रा. डॉ. कांता एम. भाला (राठी)
हिंदी विभाग,
दादासाहेब देविदास नामदेव भोले
महाविद्यालय, भुसावल–425201
जि. जलगाँव, महाराष्ट्र

.....

विश्व की विभूतियाँ जनमानस को प्रभावित करती हैं एवं जनमानस उनको अपने प्रेरणा स्रोत मानता है। उनके जीवन और कार्यो को अपना पाथेय भी मानता है। साहित्यकार इन मनीषियों के प्रति जहाँ एक ओर भावुक रहता है वहाँ दूसरी ओर तटस्थ दृष्टि से उनके जीवन कार्य का लेखा–जोखा भी करता है। नागार्जुन ने व्यक्ति–केन्द्रित कविताओं में महान मनीषियों को दृष्टि में रखा है। डॉ. चंद्रहास सिंह के शब्दों में ''नागार्जुन के यहाँ व्यक्ति केन्द्रित कविताएँ भी है। एक–एक व्यक्ति पर कई–कई कविताएँ उनकी अलग–अलग स्थितियों का भी संकेत करती है। इस दृष्टि से सामाजिक–राजनीतिक और साहित्यिक व्यक्तित्व उनकी रचना के लिए प्रेरक ऊर्जा का कार्य करता है।''[1]

कवि नागार्जुन की व्यक्तिपरक कविताओं में दो प्रकार का दृष्टिकोण दृष्टिगत होता है। एक तो वे कविताएँ हैं जिनमें किसी महान विभूति के प्रति श्रध्दा व्यक्त हुई है। इस प्रकार की कविताएँ कालिदास रवीन्द्रनाथ ठाकुर, महात्मा गांध, लेनिन, निराला, राजकमल चौधरी आदि पर लिखी गई है। दूसरी ओर वे व्यक्तिपरक कविताएँ है जो समकालीन नेताओं पर लिखी गई है। इस प्रकार की कविताओं में स्तुतिपरकता नहीं है। निःसंदेह नागार्जुन ने व्यक्तिपरक कविताओं का सृजन किया है वह शायद कही किसी कवि ने किया हो। कृष्णचंद्र गुप्त के शब्दों में –''जो कवि को वन्दनीय लगा उसकी वन्दना की भले ही पार्टी या देश की घोषित नीति के विरूध्द ही जाना पड़ा और जो घृणित लगा, निन्दनीय लगा, उसकी भरपेट निंदा की बड़े से बड़ा खतरा उठाकर। यह केवल व्यक्तिगत राग–द्वेष पर, सनक पर आधारित नहीं है, व्यापक जनहित की कसौटी पर कसा हुआ निर्णय है, जिसके मूल में कवि का अपना व्यक्तित्व है।''[2]

नागार्जुन ने सबसे अधिक कविताएँ महात्मा गांधी के जीवन और कार्य को केन्द्र में रखकर लिखी है। 'गांधी' कविता में गांधी जी की महानता की ओर संकेत किया है। कवि ने गांधीजी का प्रार्थना सभा में दर्शन किया और उन्हें देखकर अभिभूत हो गया। कवि गांधीजी के नियमित प्रार्थना पर आश्चर्य करता है क्योंकि गांधीजी का प्रार्थना क्रम निरंतर चलता रहा। वे गांधीजी को पूज्यनीय मानते हैं। यद्यपि वे शांतिदूत थे परंतु स्वार्थी व्यक्तियों ने उनके विचारों का अनुगमन न करते हुए घृणा, द्वेष और भ्रम का ही प्रचार किया। महात्मा गांधी की महानता को सम्पूर्ण विश्व नमन करता है। कवि नागार्जुन उसे 'सत्य–अहिंसा का उपासक', 'युग निर्माता' की संज्ञा द्वारा अभिहित करते हैं –

''हे सत्य–अहिंसा के प्रतीक
हे प्रश्नों के उत्तर सटीक
हे युग निर्माता युगाधार
आतंकित तुमसे पाप–पुंज
आलोकित तुमसे जग महान।''[3]

वस्तुतः महात्मा गांधी का मन 'गाँव का मन' है। वे ग्रामीण हृदयों के सम्राट हैं –

''तुम ग्रामात्मा, तुम ग्राम प्राण
तुम ग्राम हृदय, तुम ग्राम दृष्टि
तुम कठिन साधना के प्रतीक
तुम से दीप्ति है सकल सृष्टि।''[4]

पं. जवाहरलाल नेहरू को लक्ष्य कर उन्होंने 'तुमने कहा था' संग्रह में 'तुम रह जाते दस साल और', 'तुमने कहा था', 'विकल है गुलाब' और 'विजयी हुआ वसंत' आदि कविताओं का सृजन किया है। असामान्य व्यक्तित्व के धनी पं. नेहरू थे। उनके मनमोहक व्यक्तित्व में कवि के समान एक भावुकता व्याप्त थी इसीलिए उन्होंने अपनी वसीयत में यह लिखा था कि मृत्यु पश्चात् उनकी राख देश के विभिन्न भूभाग और नदियों में छिडक दी जाए। कवि के मन में प्रश्न यह है कि नेहरू की इच्छा अत्यंत पावन थी। परंतु क्या हम फसलों की सुरक्षा कर सकेंगे। राखवाली नदी के जल को निर्मल रख सकेंगे – लेकिन, अब इस वक्त/ एक बात उठ रही है मन के अंदर। किससे कहूँ?/ देगा जवाब कौन?..../ राखवाली जमीन में/ निश्चित ही उपजेंगे प्रचुर अन्न...../ लेकिन टिड्डों का हमला रूकेगा कैसे?''[5] पं. नेहरू को गुलाब का पुष्प अत्यंत प्रिय था इसलिए कवि ने नेहरू की मृत्यु पर उनके प्रति आदरांजली के रूप में 'विकल है गुलाब' भावपूर्ण कविता लिखी। 'विजयी हुआ बसंत' में नेहरू का यशगान है। जिसमें नेहरू का प्रकृति प्रेम युवा–शक्ति पर विश्वास, विश्व कल्याण के प्रति उनकी आसक्ति आदि गुणों की प्रशंसा करते हुए नागार्जुन लिखते हैं –

''तुम अशोक–अकबर–रवीन्द्र की, गांधी की अनुपूर्ति
तुम विशाल संस्कृति की प्रतीमा, तुम जन–मन की स्फूर्ति''[6]

लाल बहादूर शास्त्री एक ऐसे व्यक्तित्व थे जिन्होंने जन–मन में प्रतिष्ठा प्राप्त की थी। जब पाकिस्तान ने देश पर आक्रमण किया तब वे शक्ति–दूत के रूप में उभरे और उन्होंने तानाशाही शासन को करारा जवाब दिया। उनके व्यक्तित्व को रेखांकित करते हुए नागार्जुन लिखते हैं –

''वह वामन का परमावतार
अपनी मिट्टी की महिमा का वह कलाकार
वह अतिसाधारण, अति महान
वह ओज–तेज का कीर्तिमान
सादगी–विनय से पूर–पूर
वह आडम्बर के दूर–दूर

वह परम अकिंचन, कर्मवीर, वह सत्यगंध
वह बारूदी बदबू पर ताजी मलय–गंध।''[7]

अपने मित्र भारद्वाज के बलिदान का चित्रण 'साथी रूद्रदत्त भारद्वाज' कविता में करते है। भारद्वाज ने अंग्रेजो के शासन में कारावास होगा तत्पश्चात् उन्हें अस्पताल में भरती किया गया परन्तु उनका असामयिक निधन हुआ। जुल्म के विरूध्द संघर्षरत इस शहीद को कवि यही कहना चाहते है कि –

''साथी भारद्वाज, तुम्हारा यह अद्‌भुत बलिदान
जुल्मों के प्रति घोर घृणा का लाया है तुफान।''[8]

कवि अपने मित्र को आश्वस्त करता हुआ यही कहता है कि –''तुम्हारी बड़ी–बड़ी आशाएँ सारी/ पूरी होंगी, पूरी होंगी/ महामान्य प्रिय बन्धु,/ तुम्हारे काम अधूरे/ पूरे होंगे, पूरे होंगे।''[9]

नागार्जुन को जिन व्यक्तियों ने अत्याधिक प्रभावित किया, उनके मन–मस्तिष्क को झकझोरा। वे महान विभूतियाँ उनके काव्य के भी प्रेरणा–स्रोत रहे हैं। उनके उदात्त कार्य को कवि ने अपने काव्य के माध्यम से मुखरित किया है। 'बंधु डॉ जगन्नाथ' में उनके कृतित्व को रेखांकित करते हुए वे लिखते है कि वे 'तंजौर के भूमिहीन खेत मजदूरों के बीच कार्य करते रहे है। तामिलनाडू के ग्रामांचल उनके लिला निकेतन रहे है। गरीब कृषक एवं खेत–मजदूरों के वे श्रध्देय रहे हैं।

कवि की अपनी एक सोच है। उनकी यह सोच किसी बंधी–बंधायी विचारधारा पर आधारित नहीं है। महर्षि अरविंद आध्यात्मिक गुरू के रूप में प्रसिध्द हुए परंतु नागार्जुन को यह इष्ट नहीं है। कवि उन्हें देशभक्त के रूप में ही देखना चाहते थे। यही कारण है कि वे 'योगिराज अरविंद' कविता में अरविंद को संबोधित करते हुए लिखते हैं –

''चिदानन्द की रोचक मदिरा बाँट रहे हो
खूब रचा है चक्रव्यूह अध्यात्मवाद का
नियति नटी के गृहय कवच से लैस तुम्हारे चेला–चाटी
शान्ति पाठ करते फिरते हैं।''[10]

इस कविता के संदर्भ में डॉ. संतोषकुमार तिवारी लिखते है – ''नागार्जुन ने योगिराज अरविंद को भी अपने व्यंग्यबाण का निशाना बनाया है क्योंकि शून्यवाद के चरम भक्त एवं अनासक्त योगिराज की तुलना में कवि जन–युग के सैनिक की प्रबुध्द–प्रबल पक्षधरता को महत्व देता है जो अध्यात्म के चक्रव्यूह से दूर नये युग पथ का निर्माण करती है।''[11]

राजनीतिक चेतना के कवि नागार्जुन ने कतिपय नेताओं को लक्ष्य कर उन पर काव्य सृजन किया। 'भारती उमा' नामक कविता में वे उमा भारती के संतनी लिबास का उल्लेख करते हुए उन्हें 'भा. ज. पा.ई राज में होगी अन्नपूर्णा होगी भवानी' के नाम से अभिहित करते है एवं उन्हें दर्शकों की रानी विहिप में 'तरूणों की नानी' कहते हैं।

उनकी राजनीतिक चेतना केवल भारतवर्ष तक सीमित नहीं हैं वे विश्व में जहाँ–जहाँ अंग्रेजो द्वारा किसी पर अत्याचार हुए है उसका भी रेखांकन करते है। अफ्रिका के क्रांतिकारी लुमुम्बा के प्रति अपने श्रध्दा सुमन अर्पित करते हुए उन्होंने लिखा है –

''तुम मरकर भी अमर रहोगे, लोगे ही प्रतिशोध
कालनेमि को भस्म करेगा जन–जन का यह क्रोध
कोटि–कोटि काले कंठो की सुन–सुनकर ललकार
वह देखो, गोरे दनुजों पर भय का चढ़ा बुखार।''[12]

'साथी स्टालिन' कविता में कवि साम्यवादी चिंतक स्टालिन के प्रति अपना मनोभाव अभिव्यक्त करते हैं। वस्तुतः इस चिंतक ने साम्यवादी विचारधारा के माध्यम से मार्क्सवादी चिंतन का उद्घोष किया है। यही कारण है कि साम्यवादी जगत में स्टालिन को सराहा जाता है। कवि स्टालिन का गुणगान करते हुए उन्हें करोड़ों श्रमिकों के त्राता, नये सृष्टि के विधाता, जनयुग के निर्माता विशेषणों से अभिभूत किया है। कवि के अनुसार स्टालिन दीपस्तंभ के समान हैं जो मानवता को दिशा दिखाते हैं, महामुक्ति का मंत्र देते है, समाज को सजग बनाते हैं, सामुहिक श्रम का महत्व प्रतिपादित करनेवाले स्टालिन कौल, भील, नीग्रो जैसे समाज को भी प्रिय है, वे दलितों के मसीहा और उपेक्षितों के मार्गदर्शक थे। यह स्टालिन का ही प्रभाव था कि सोवियत, उजबक ताजिक आदि देशों में समानता को महत्व प्राप्त हुआ –

''सभी सुखी हैं, सभी मातबर
सभी जातियाँ वहाँ बराबर
कोई भी कमजोर नहीं है
सबके हाथों में है पावर।''[13]

साम्यवाद के उद्घोषक गोर्की के प्रति भाव समर्पित करते हुए उनकी सौंवी वर्षगांठ पर 'भारतीय जनकवि का प्रणाम' नामक कविता में वे उन्हें 'श्रमशील जागरूक जग के पक्षधर असीम' मानते है। गोर्की ने कहा था कि नये युग का मानव समझौता नहीं करेगा, संघर्ष उसका ध्येय होगा। वास्तव में विश्व ने सर्वप्रथम गोर्की से सीखा था 'बहुजन समाज के अन्तस की अभिव्यक्ति का कौशल' कोटि–कोटि हृदयों में स्फूर्ति का संचार करनेवाले मैक्सिम गोर्की के योगदान का रेखांकन द्रष्टव्य है –

''दे गये हो सर्वहारा को मुक्ति का मंत्र
कह गये हो, हासिल कैसे सर्व–सिध्द मंत्र
ओ हे, इस युग के द्वैपायन व्यास।''[14]

साम्यवादी नेताओं की परम्परा में कॉमरेड लेनिन को सलाम करते हुए नागार्जुन ने 'याद आता है तुम्हारा नाम' नामक कविता लिखी है। कवि को विश्वास है कि विश्व में जिन्हें 'बित्ताभर जमीन', 'घंटाभर काम', 'भोजन और आराम', 'ज्ञान–विज्ञान का अंजन', 'ललित मनोरंजन' आदि उपलब्ध नहीं है उन्हें लेनिन का मार्ग अपनाना पड़ेगा तभी सुख–सुविधा उपलब्ध हो सकेगी। साम्यवादी कवि नागार्जुन साम्यवादी नेताओं के प्रति अपनी आदरांजली व्यक्त करते रहे हैं। लेनिन की समाधि पर 'लू–शुन' कविता इसी प्रकार की हैं। वे 'लू–शुन' को क्रांतिदर्शी और सर्वहारा वर्ग के बंधु मानते हैं। कवि जनचेतना के अक्षय उत्स लु–शुन के प्रति प्रणत होता है जिसने श्रमशील जनों को सीख दी थी। रशिया के लिए युग प्रवर्तक रहे लेनिन के प्रति श्रध्दा व्यक्त करते हुए वे उन्हें जनसाधारण का नायक मानते हैं –

''तन वामन, व्यक्तित्व महान
श्रमिक जनों के सुखद सुजान
भूख जहालत के प्रतिकार
दलित वर्ग के तारणहार
जय–जय लेनिन गुण अभिराम।''[15]

जहाँ एक ओर नागार्जुन साम्राज्यवाद के पोषक आईजनहावर पर क्षोभ व्यक्त करते हैं वहीं दूसरी ओर साम्राज्यवाद के कट्टर विरोधक आफ्रिका के नेता जोमो केन्याता के प्रति अपनी श्रध्दा व्यक्त करते हुए कहते है कि निश्चित ही ये गोरे तुम्हें नेस्तनाबुत करने का प्रयास करेंगे। तुम्हारे विरूध्द रेडियों और समाचार पत्रों के माध्यम से आग उगलेंगे। तुम्हें वन्द मानव पशु कहकर तुम्हें महादुष्ट भी कहेंगे परन्तु तुमसे निवेदन है कि –'छिन्न करो साम्राज्यवाद नाग पाश को' क्योंकि तुम 'मातृभूमि रक्षा के कारण तन–मन–धन–जीवन के दाता हो।

नागार्जुन कतिपय साहित्यकारों से प्रभावित रहे हैं और उन साहित्यकारों को श्रध्दासुमन अर्पित करते हुए उन्होंने स्तुतिपरक काव्य–रचना की है। वे प्रेमचंद को युगधर्मी और पथ–प्रदर्शक साहित्यकार स्वीकार करते हैं। नागार्जुन स्वयं संवेदनशील है अतएव संवेदनशील महाकवि निराला के प्रति अपनी भावना व्यक्त करते हुए उन्होंने 'महाकवि निराला', 'दधीचि निराला' नामक दो कविताएँ लिखी। कवि उन्हें 'परम प्रबुध्द महाकवि' एवं 'ममतामय पिता', 'स्नेही सखा' के रूप में देखते हैं। निराला कवियों के उद्‌बोधक थे, चेतनादायी थे। अतः भावुक नागार्जुन उनके प्रति अपनी हृदयगत भावना व्यक्त करते हैं। निराला जी की विशेषता थी कि वे उपेक्षितों के प्रति संवेदनशील थे जैसा कि नागार्जुन ने लिखा हैं –

''दीन–दुर्दशाग्रस्त जनों की दुख–दुविधा पर।
डाँट रहे शोषक समाज को।''[16]

कवि ने निराला जी को कहीं दधीचि के रूप में देखा है तो कहीं नीलकंठ के रूप में, जो युग की पीड़ा का पान करते हैं – महाप्राण निराला के स्वास्थ्य और उनकी हुई उपेक्षा पर व्यथित होते हैं। 'भारती सिर पिटती है' कविता में उनकी यही व्यथा व्यक्त हुई है। उनके तपस्वी जीवन को दृष्टि में रखकर उन्हें दधीचि, भीष्म पितामह और शिवाजी के समकक्ष रखते हुए उनकी स्वाभिमानी प्रवृत्ति पर लिखते हैं –

''वह द्वापरवाली शर–शैया की चुभन आज
आए, कोई तुमसे सीखे, युग युग का हालाहल
आए कोई तुमसे सीखे, यह रक्तदान
आए कोई तुमसे सीखे, यह स्वाभिमान।''[17]

माखनलाल चतुर्वेदी को दृष्टि में रखकर कवि ने 'अग्निबीज' कविता लिखी। उनके अनुसार चतुर्वेदी जी को ऋषि की उपाधि मिली थी। वे यथार्थ में भारतीय आत्मा थे, वे लाभ और लोभ की हीनभावना से परे थे और वे अपने ही लोगों की नियत से व्यथित भी होते थे। कवि उनकी उदात्तता को नमन करते हैं।

राहुल सांकृत्यायन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से कवि इतने प्रभावित हुए है कि उनके पुत्र 'इगोर राहुलोविच' पर कविता लिखी। वे राहुल जी के प्रति समर्पित रहे है।

हिंदी के व्यंग्य कवि 'हरिशंकर परसाई' के व्यंग्य बाणों की प्रशंसा नागार्जुन करते हैं। परसाई जी के व्यंग्यबाण समाज को चुनौती और चेतावनी देने का कार्य करते हैं –

''घृतराष्ट्र दुखी होंगे, नकली
भीमों का होगा अ–कल्याण
सदियों तक कुन्द नहीं होंगे
गुरू परसाई के वचन बाण।''[18]

कवि राजकमल चौधरी को दृष्टि में रखकर नागार्जुन ने 'चौधरी राजकमल' एवं 'अच्छा किया, उठ गए हो दुष्ट' कविताएँ लिखी है। राजकमल चौधरी ने समाज में व्याप्त विसंगतियों, विद्रूपताओं को अपने काव्य का कथ्य बनाया और इसके लिए उन्होंने बेबाक भाषा प्रयोग की। वस्तुतः यह एक लम्बी कविता है जिसमें कवि राजकमल के जीवन प्रसंगों के माध्यम से उनके व्यक्तित्व को उभारते हुए उनके काव्य–व्यक्तित्व की प्रशंसा करता है –

''हमारी ही पीढ़ी की खुदगर्जी और ढोंग से
फूट निकला था यह फूल
यानी रा. क. चौधरी।''[19]

गीतकार शैलेन्द्र के सृजन व्यक्तित्व का रेखांकन 'शैलेन्द्र के प्रति' कविता में हुआ है। शैलेन्द्र को वे 'गीतों का जादूगर', 'युग की व्यथा का गायक', 'प्रतिभा का ज्योति पुत्र' विशेषणों से अलंकृत किया है।

स्पष्ट है कि नागार्जुन ने व्यक्तिपरक कविताओं में महान विभूतियों के प्रति स्तुतिगान किया है तो किसी राजनीतिक नेता के प्रति आक्रोश भी व्यक्त किया है। यह आक्रोश इतना तीव्र था कि कवि अपने आप को संयमित नहीं कर सका है। ''आज के युग की विडम्बना, स्वयं को स्थापित करने के लिए झुठी प्रशंसा की फुहारे' कवि ने नहीं छोड़ी, अपितु अनुचित को अनुचित कहने की निर्भयता और साहस को बढ़ावा दिया है। हाँ व्यक्तिवादी भर्त्सनाओं में यदि कवि अपने कुछ संचय रखता तो संभवतः अधिक सफल होता। किन्तु नेताओं की स्वार्थपरता और दलितवर्ग की दयनीय दशा में कवि के हृदय से उमड़ी अन्तर्वेदना की प्रबलधारा सहनशीलता के बांध को तोड़ गई।''[20]

अतः हम कह सकते है कि – कवि नागार्जुन ने व्यक्ति केन्द्रित कविताओं में अतिशयोक्तिपूर्ण–स्तुतिगान नहीं किया है। महान विभूतियों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का यथार्थ अंकन किया है। कतिपय राजकीय नेताओं की अयोग्य नीतियों के प्रति प्रक्षोभ व्यक्त किया है। फलस्वरूप कवि की प्रामाणिकता सिध्द होती है।

.....

संदर्भ ग्रंथ

1) नागार्जुन की कविता – डॉ. चन्द्रहास सिंह, पृ. 61

2) नागार्जुन – सं. सुरेशचन्द्र त्यागी, पृ. 15

3) नागार्जुन रचनावली खंड 2 – सं. शोभाकांत, पृ. 39

4) पूर्ववत् – पृ. 39

5) नागार्जुन रचनावली खंड 1 – सं. शोभाकांत, पृ. 384

6) पूर्ववत् – पृ. 386

7) पूर्ववत् – पृ. 403

8) पूर्ववत् – पृ. 403

9) पूर्ववत् – पृ. 104

10) पूर्ववत् – पृ. 175–176

11) नये कवि : एक अध्ययन – डॉ. संतोषकुमार तिवारी, पृ. 130

12) नागार्जुन रचनावली खंड 1 – सं. शोभाकांत, पृ. 351

13) पूर्ववत् – पृ. 235

14) नागार्जुन रचनावली खंड 2 – सं. शोभाकांत, पृ. 16

15) पूर्ववत् – पृ. 49

16) नागार्जुन रचनावली खंड 1 – सं. शोभाकांत, पृ. 186

17) पूर्ववत् – पृ. 356

18) इस गुब्बारे की छाया में – नागार्जुन, पृ. 42

19) नागार्जुन रचनावली खंड 1 – सं. शोभाकांत, पृ. 434

20) समाजवादी यथार्थवाद तथा नागार्जुन का काव्य – प्रेमलता दुआ, पृ. 91

.....